Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-4, March-2020
www.researchguru.net

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के कहानीयों में सामाजिक व्यंग्य

हेमांगनीबहन किरणभाई चौधरी
पीएच.डी.शोधार्थी, हिन्दीभवन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,राजकोट hkchaudhari14@gmail.com
Mo.8758100295

सारांश

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एक उमदा कोटी के कवि एवं नाटककार होने के साथ-साथ कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक और पत्रकार भी थे। हिन्दी साहित्य लेखन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सर्वेश्वरजी ने कहानी से ही लिखना प्रारंभ किया था। सन 1943 से सन 1950 तक वे कहानीया लिखते थे बाद में काव्य लिखना प्रारंभ किया। तीन चार साल तक काव्य लिखने के बाद फिर से कुछ कहानीयाँ लिखी। सर्वेश्वरजी ने अपनी कविता एवं नाटक के भाँति कहानियों में भी जो देखा जो महसूस किया उसे सबके सामने प्रस्तुत किया है। यानी हम कह सकते है कि उसने अपने जीवन के अनुभवो को हमारे सामने रखा है।

शब्दकुंजी

सर्वेश्वरजी का जीवन, नारी की बेबसी, रुढिचुस्त रिवाजों पर व्यंग्य, पति-पत्नी का संबंध, अमीरों का व्यंग्य, मानवीय मूल्यो पर व्यंग्य

प्रस्तावना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म 15 सितंबर 1927 को पिकौरा गाँव में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा सक्सेरिया इण्टर कॉलेज बस्ती में हुई। सर्वेश्वरजी ने कॉलेज के समय से कहानीया लिखना प्रारंभ कर दिया था। अपनी शिक्षा के बाद सर्वेश्वरजी आकाशवाणी दिल्ली के समाचार विभाग में हिन्दी अनुवादक के रुप में काम करने लगे। इसके बाद आकाशवाणी लखनऊ में सहायक प्रोड्यूसर बने। उन्होंने कई मुश्किलों का सामना करके अपनी दोनों बेटियों का पालन पोषण किया। बचपन से ही उन्होंने दुःखों को झेला था। किशोरावस्था में माँ का निधन, युवावस्था में पत्नी का निधन छोटी अवस्था में पुत्र का निधन, पत्नी के जाने के बाद अपनी बेटियाँ की जिम्मेदारी ये सब परिस्थितियां उनको तोड़ देनेवाली थी फिर भी वह इन सब दुःखो से लडते रहे। सर्वेश्वरजी के बारे में डॉ.अखिलेश गोस्वामी कहते है कि "बाहर से देखने में जिन सर्वेश्वर को हम गहन, गम्भीर और चट्टानी-सा पाते थे, उनको निजी क्षणों में देखने से लगता था कि सर्वेश्वर जो कुछ देखने में लगते थे वास्तव में वह नही है, बल्कि उसके विपरीत जो वह अपने घर में अपनी बच्चियों के साथ जाते हैं, वही असली है।"[1] सर्वेश्वरजी का नाम कहानीकार एवं कवि के रुप में गौरव के साथ लिया जाता है। उनकी कहानीयां विविध समस्या एवं जीवन के कटू सत्य को प्रकट करती है। उन्होंने अपनी कहानीयों में गाँव का जीवन, बेरोजगारी, धार्मिक ढोंग, गरीबी-अमीरी एवं रीत-रिवाजों विस्तृत रुप से प्रस्तुत किया है।

नारी की बेबसी

सक्सेनाजी की कहानीयों में स्त्री की लाचारी, मजबूरी और बेबसी पर व्यंग्य देखने को मिलता है। 'टूटे हुए पंख' कहानी में

शीला कहती है "उफ जीवन भी क्या है? एक मजबूरी, घेर-घेरकर मजबूरी, यहाँ हम हँसते है मजबूरी के ही कारण, रोते है मजबूरी के ही कारण। मजबूरी केवल मजबूर, घेर-घेरकर मजबूरी। और कुछ नहीं है जिन्दगी क्या?"[2] सर्वेश्वरजी ने नारी जीवन की विडम्बना का बहुत गहराई से चित्रण किया है। स्त्री पुरुषों के हाथों का एक खिलौना बनकर रह गई है। जन्म के बाद पिता, विवाह के बाद पति एवं अंत में पुत्र के नाम से जानी जाती है। इसी तरह 'बेबसी' कहानी में नायिका भी विवाह के पश्चात् पतिमय हो जाती है। कहने का तात्पर्य यही है कि विवाह के बाद मधु का पूरा जीवन बदल जाता है। मधु पत्र लिखकर लेखक को कहती है - "मैं अब भी वही हूँ, मुझ में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है, में कही भी बदली नहीं हूँ, लेकिन आज परवश हूँ, बेबस हूँ, निरुपाय हूँ..."[3] इस तरह सक्सेनाजी ने नारी की दर्दभरी कहानी हमारे सामने प्रस्तुत की है। आज भी समाज में लड़के और लड़कियों के बीच फर्क समझा जाता है। उनके बीच भेदभाव किया जाता है। लेकिन धीरे धीरे आज समाज में परिवर्तन हो रहा है। लड़के लड़की का भेद कम हो रहे है।

रुढिचुस्त रिवाजो पर व्यंग्य

हम जिस समाज में जी रहे हैं उसके कुछ नीति-नियम है हमें उसके आधीन रहना पडता है। व्यक्ति समाज में रहकर समाज के विरुद्ध कार्य नही कर सकता। सामाजिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का पालन करना पडता हैं। सर्वेश्वरजी ने इसी मान्यताओं पर भी करारा व्यंग्य किया है। उसकी 'सफलता' कहानी में इसी परम्परा एवं मान्यताओं पर व्यंग्य किया है। इस कहानी में रीत-रिवाजों में आधीन एक पिता अपने मरे हुए पुत्र को नहलाता है, लेकिन शरीर भारी हो जाने की वजह से ठीक तरह से नहला नही पाता। और निर्जीव शव के प्रति निष्ठूर व्यवहार कर बैठता है। "कमीज अभी भी बाहों से नही निकल रही थी और उसके कही और से फटने की भी सम्भावना नहीं थी। वह उब गया था। चारों तरफ देखा और ऐसे कोण पर खडा हो गया जहाँ से दूसरों की निगाहे यह न देख सके कि वह क्या कर रहा है। उसने मोह छोड़ा और अकडी बाहों को खींचकर निमर्मतापूर्वक कमीज की बाँह निकाल ली।"[4] पिताने कमीज निकालकर जैसे सफलता पा ली, यानी निर्जीव शरीर के प्रति मानव कितना क्रूर हो जाता है। इसी तरह "बेबसी" कहानी में भी मधु सामाजिक रीत-रिवाजों के कारण अपनी मर्यादा के अनुसार अपना जीवन प्रारंभ करती है। मधु जैसे पहले थी अब भी वही है पर समाज के रीत-रिवाजों के आगे बेबस थी।

पति-पत्नी का संबध

पति-पत्नी का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता है जो समाज में सम्मानपूर्वक देखा जाता है। कहा जाता है जोडीया यहाँ नहीं स्वर्ग से बनकर आती है। उनका रिश्ता जन्मो जनम का होता है पर आज के समय में एक दूसरे के प्रति विश्वास का अभाव देखने को मिलता है और इनके कारण उसके रिश्ते में दूरियाँ आ रही है। एक दूसरे को समझ नहीं पाने की वजह से छोटी छोटी बातों पर रिश्ता टूटने की कगार पर आ जाता है। सर्वेश्वरजी की 'प्रेमविवाह' भी एक ऐसी ही कहानी है। नायिका रुपा धनवान पिता की पुत्री है उसे एक गरीब

युवक से प्रेम है और वह उसी से विवाह करना चाहती है। उसके पिता उसे समझाते हुए कहते है कि "प्यार आत्मिक सम्बन्ध हो सकता है पर विवाह आर्थिक सम्बन्ध है। प्यार नहीं रुपया जरुरी है विवाह के लिए तुम्हे आगे चलकर रुपए की कमी खलेगी और तब यही प्यार खोखला लगने लगेगा। यह एक क्षणिक भावुकता है जिसमें आकर तुम सब चीज पर ठोकर मार रही हो।"[5] रुपा धनवान पिता की पुत्री होने के कारण सभी सुविधा उन्हें मीली थी। मगर शादी के बाद गरीब के कारण जीवन जीने में असमर्थ हो जाती है। जीवन के कटु सच्चाई के सामने उसका प्रेम डगमगाने लगता है। रुपा ने गरीब में जीने के सभी प्रयास किये मगर वो हार जाती है। और उसके रिश्ते में दूरिया आ जाती है। सच्चे प्यार का आधार विश्वास, पवित्रता संयम एवं एक दूसरे की समझदारी पर टीका हुआ होता है। सर्वेश्वरजी ने 'डूबता हुआ चांद' कहानी में पति-पत्नी के रिश्ते के बारे में बताया है। सेठ ऐशो आराम की जिंदगी जीता हैं उसे अपनी बीमार पत्नी की कोई परवार नही है। ये सारी संपत्ति अपनी पत्नी की होने के बावजूद वो अपनी पत्नी की कदर नहीं करता। फिर भी पत्नी अपने पति की खूशी में खुश रहती है। पति द्वारा दी गई तकलीफ उसे तकलीफ नहीं लगती और कहती है कि "नहीं पति देवता होता हैं। दुनिया की निगाह में बुरा होने पर भी औरत की निगाह में बुरा नहीं होता। औरत को उसे बूरा कहे या समझने का कोई हक नहीं है।"[6] इस तरह पत्नी हँसती हुई हर तकलीफ सहन करती है। लेकिन अपने पति से शिकायत तक नहीं करती।

अमीरों पर व्यंग्य

सर्वेश्वरजी ने अपनी कहानीयों के मध्यम से अमीरों पर भी व्यंग्य किया है। अमीर लोग अपने स्वार्थ के लिए गरीब लोगों के जीवन से खेलते है। उनकी दृष्टि में उनके जीवन का कोई मूल्य नहीं है। 'बरसात अब भी आती है, कहानी में अमीर लोगों के स्वार्थ एवं स्वभाव का चित्रण किया है। बाँध रक्षक पुलिस बाँध टूटने की हालत जानकर बेसहारा लडकी और बच्चे को बचाने का सतत प्रयास करता है, तो दूसरी और पहाडी की मकान में रहनेवाली औरत चाहती तो घर के अंदर रखकर उस लड़की की जान बचा सकती थी। पर उसने ऐसा न करके अपने कुत्ते की खोज में भेजा और उसी समय बाँध टूटने की वजह से वह पानी में बह गई और कभी वापिस नहीं आयी बाँध रक्षक पुलिस दूसरे दिन उसे लेने जाता है पर वो नहीं मिलने पर उस औरत से पूछता है -

"मेंने पुछा वह लडकी कहाँ है ?

कौन ? तुम्हारी पत्नी ?

हाँ ! शायद डूब गई

मेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक गई। मैंने हिम्मत की कैसे"

वह बोली, मुझे लगा जैसे मेरा कुत्ता भाग गया है, क्योंकि वह घर में कही नहि मिलता था। मैंने उसे खड्डे की तरफ खोजने के लिए भेजा था। वह गई तो लेकिन लौटी नहीं।"[7] इस तरह अमीर लोग अपने कुत्ते के लिए गरीबों के प्राण ले लेते है। गरीबों के प्राणों की उसे कोई किंमत नहीं होती।

मानवीय मूल्य पर व्यंग्य

मानवी आज के बदलते युग में प्राचीन मान्यताओं, संस्कृति विवेक के स्थान पर जीवन की बदलती परिस्थितियों का स्वीकार करके जीवन के नैतिक मूल्य खो बैठा है। वह आधुनिक ढंग में इतना ढल गया है कि उसे कोई काम अनैतिक नहीं लगता। एक आदमी दूसरे आदमी के भावनाओं के साथ खेलने लगा है। दूसरे व्यक्ति का दर्द, पीडा, तकलीफ उसे दिखाई नहीं देती। उसे सिर्फ अपना स्वार्थ दिखाई देता है। इसी स्वार्थ को पार करने के लिए किसी की हत्या करने में भी उसे संकोच नहीं होता। सर्वेश्वरजी ने 'जिंदगी और मौत' कहानी में यही चित्रण किया है। इस कहानी में एक बहन अपने प्रेम के खातिर दूसरी बहन की हत्या करने में भी संकोच नहीं करती। लता वनराज से प्यार करती है यह बात जानकर मन्दालसा उसे मारना चाहती है। मन्दालसा लता को वनराज के जीवन से दूर चले जाने एवं नफरत करने क्यों कहती है तब लता उसे कहती है कि "तेरा प्रेम वह नहीं है जिसका आदर्श त्याग है, जिसका अंत बलिदान है। अपने कुटिल स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए आज मनुष्य प्रेम का ढोंग रचता फिरता है। जिस प्रेम को तूं आर्शिवाद पर खींच रही है वह कुत्सित वृत्तियों के कीचड में है। मिथ्या को सत्य मत बना।"[8]

मन्दालसा लता को मारना चाहती है पर वनराज उसे बचा लेता है और मन्दालसा को अपने जीवन से दूर कर देता है आगे चलकर मन्दालसा राजा से शादी कर लेती है। पाँच साल बाद जब फिर से लता एवं वनराज को देखकर उसे पुरानी बातें याद आती है। उनको मारने की योजना बनाकर राजा से मौत देखने की इच्छा व्यक्त करती है। राजा मन्दालसा की इच्छा पूरी करने के लिए वनराज और लता की नाव को डूबवा देता है। ये देखकर लता गभरा जाती है तब वनराज उसे कहता है "डरती है तू ! पगली हम तुम साथ साथ मर रहे है इससे बढ़कर और कौन सा सुख हो सकता है? यह मात नहीं है लता इसे जिन्दगी कहते है।"[9] इस तरह वनराज और लता मर कर भी अमर हो जाते है और मन्दालसा जीत कर भी हार जाती है। इस प्रकार मन्दालसा अपने स्वार्थ के लिए अपनी ही बहन और उनके पति को मरवा देती है। इसलिए हम कह सकते है कि आज समाज में नैतिक मूल्य से ज्यादा अपना स्वार्थ प्रिय हो गया है।

उपसंहार

इस तरह सक्सेनाजी की कहानीयों में विभिन्न समस्याओं को दर्शाया गया है। व्यक्ति, घूटन, दर्द, पीडा एवं तकलीफ से झूजता रहा है। उनके पात्र हर एक तकलीफ से झूजकर बिखरते दिखाई देते है और बाद में खडे भी होते है। सर्वेश्वरजी की कहानीयों पर आधुनिक जीवन का विशेष प्रभाव रहा है। और इन्हीं के कारण उसे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सर्वेश्वर व्यक्ति और रचना कार पृ.10
2. बदला हुआ कोण (टूटे हुए पंख) पृ.60
3. वही (बेबसी) पृ.72
4. क्षितिज के पार (सफलता) पृ.124
5. बदला हुआ कोण (प्रेम-विवाह) पृ.75
6. वही (डूबता हुआ चाँद) पृ.113
7. वही (बरसात आज भी आती है) पृ.100
8. क्षितिज के पार (जिन्दगी और मौत) पृ.33
9. वही, पृ.37